

## **Prof. H. S. Srivastava Memorial Lecture**

Prof. H. S. Srivastava Foundation for Science and Society, Lucknow, India, celebrated the 21<sup>st</sup> *Puniya Tithi* (anniversary) of Prof. H. S. Srivastava on dated March 09<sup>th</sup>, 2022.

On this special occasion Prof. (Dr.) Shailendra K Saxena, Vice Dean and Head, Center for Advanced Research, King George's Medical University, Lucknow, was the chief guest and delivered the memorial lecture on topic entitled “Pandemic to endemic: Learning to live with COVID-19 & it's variants”.

The programme was started with generous floral tribute to Prof. H. S. Srivastava at office and live joined through webinar.

Prof. S. K. Barik, President PHSS Foundation, Lucknow, welcome the chief guest, special invitees and all participants and highlighted the work of Prof. Srivastava and importance of memorial lecture. After that Prof. Rana Pratap Singh, General Secretary PHSSFSS, welcome all the guest, participants and underlined his association and memory with Prof. H.S. Srivastava. Dr. R. D. Tripathi, Vice President of PHSSFSS welcome and introduce the Chief Guest of the function.





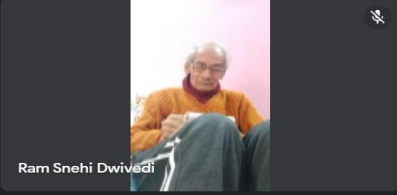


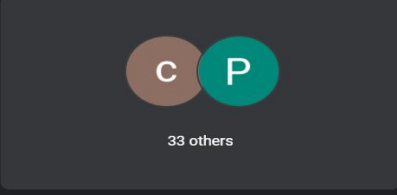

Prof. S.K. Saxena nicely presented the hidden story of COVID-19. The lecture particularly focused on History, origin, causes, precautions and future direction researches related to COVID pandemic. Dr. Saxena stated that, how CORONA virus affected our internal organs and how our immune system work against the viruses and what are the first aid to prevent it. They also informed that recently several drugs are coming in the market along with the available vaccines.


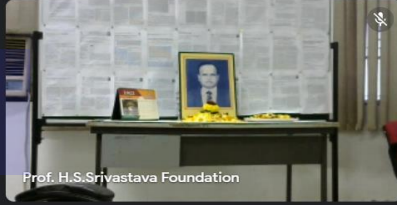





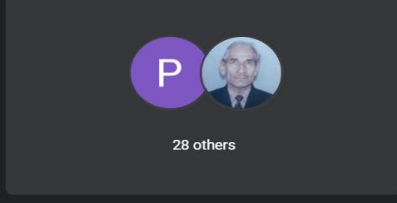

Dr. S. K. Sopory, former VC JNU, New Delhi, happy with the progress of the Foundation and appreciated the work of Dr. Saxena and his team during COVID period. Dr. Sopory also discuss the work of Prof. Srivastava.

Prof. (Dr.) Malvika Srivastava, recall the memory of late Prof. Srivastava, and discuss about the time spend with sir and highlighted the personal as well as research activities during the learning period.

Dr. P.K. Seth, Former president PHSSFSS and NASI Senior Scientist presented the concluding remarks of the programme and profusely appreciated the lecture of Dr. Saxena and ask that the lecture is a real tribute to Prof. Srivastava.

At the end of the programme, Dr. R. S. Dwivedi Former President PHSSFSS, given vote of thanks to the Chief Guest and all the participants. The programme was coordinated by Dr. Rajesh Bajpai.

 Rudra deo Tripathi	 Prasad Seth	 prof malvika srivastava
 Professor Rana Pratap Singh	 Ram Snehi Dwivedi	 Sudhir Sopory
 Prof Ramchandra	 33 others	 You

 DrSK Saxena	 Prof. H.S.Srivastava Foundation	 Rudra deo Tripathi
 Sudhir Sopory	 Prof Ramchandra	 Mohammed Latif Khan
 prof malvika srivastava	 28 others	 You

## NSD 2022 Report

Prof. H. S. Srivastava Foundation for Science and Society, Lucknow, India celebrated the National Science Day on **28<sup>th</sup> February 2022** through online. The programme was illustrious with the UN assembly theme of this year “International Year of Basic sciences for sustainable development” and “Vigyan Sarvatra Pujyate” refrain of Ministry of Science and Technology India.

The programme was started at afternoon (5:00PM) with the welcome remarks from Dr. Rana Pratap Singh, General Secretary, PHSSFSS, India. Dr. Singh welcomed all the dentaries. Further Dr. Singh deliberated about the importance of the day and the foundation, in details.

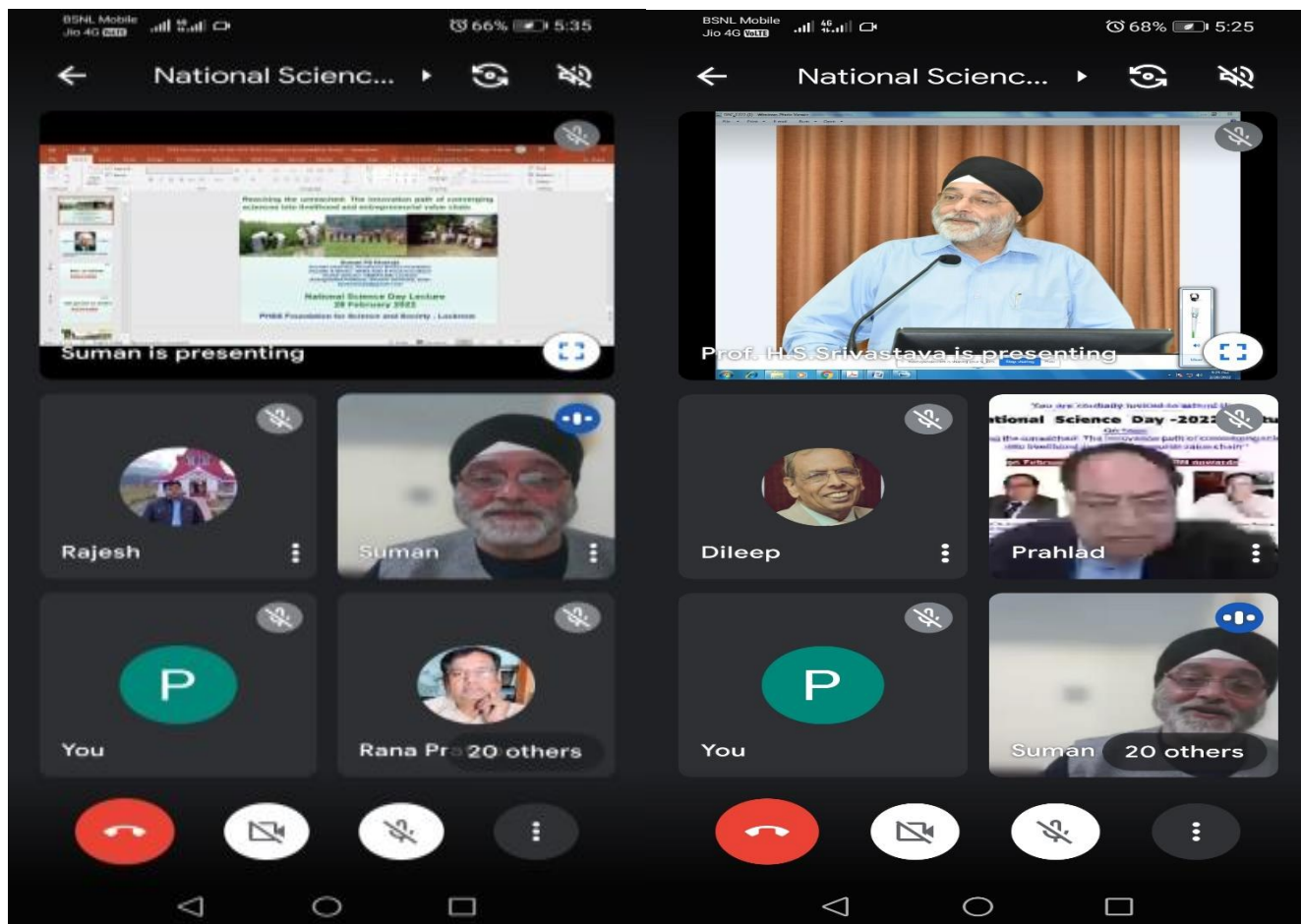
Dr. Dr. P. K. Seth, NASI Senior Scientist, and Ex-President PHSSFSS, Lucknow briefly introduce Chief Guest and also give importance of the theme.

The Chief Guest of the programme was Dr. Dr. S. P. S. Khanuja, Former Director CSIR-CIMAP, Lucknow and Founder Chair, Flora Fauna Science Foundation. Dr. Khanuja delivered his talk on the topic “*Reaching the unreached: The innovation path of converging sciences into livelihood and entrepreneurial value chain*”. Dr. Khanuja given the prominence on “Think beyond” is the mantra to innovate while science provides the runway for wings of the mind to take off to reach where it never did before! The answer to the quest of mind for what, how and why is simple way to define science and hence any one can become a scientist in life by efforts to satisfy this quest. But there are a few rather very few examples among them who dare to ask “Why not?” That’s the route to “innovation” which leads to the unreached horizons. Science and nature have always questioned each other and then merged also whenever the question is answered. Some of such situations that genome of living organisms teaches us are like “too few genes – too many products” or “tall grows into dwarf”. Interestingly chemistry of drugs with biology shows “one plus one making much more than two or even zero”.

However, they emphasized that there are so many opportunities of career and entrepreneurship for the younger generation from learning of science and applying in industry through a path breaking way by adopting the “why not” approach of innovation. Such case examples of technology creation by “think beyond” approach and strategic application of convergent scientific knowledge which excites the young minds to move on the career path in novel ways will be highlighted in the interaction.

About more than 40 participants from different part of the country attended the programme online through google meet (meet.google.com/nuc-kswc-exb). After the culmination of chief guest lecture, Dr. P. K. Seth sir, given his presidential address and emphasized that there is a need to make strategies to do science for society and take research from lab to land and joint hand for sustainable development.

At the end Dr. R. S. Dwivedi Sir, given vote of thanks to all Chief Guest and all the participants. The programme was coordinated by Dr. Rajesh Bajpai.



## National Science Day- 2020

वज्ञान के क्षेत्र में हमें सही दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता है, प्रकृति भी उसमें हमारी मददगार होगी। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्व विद्यालय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के मौके पर बायोटेक पार्क के पूर्व सीईओ प्रो. पीके सेठ ने यह उद्गार व्यक्त किए।

इस वर्ष विज्ञान दिवस महिलाओं को समर्पित 'वीमेन इन साइंस' विषय पर आयोजित किया गया है। इसमें बतौर **मुख्य अतिथि** अपने विचार रखते हुए **प्रो. सेठ** ने कहा कि वर्तमान में इस उत्सव को किसी एक या दो संस्थाओं द्वारा अलग-अलग मनाने की जगह पूरे शहर को मिलाकर किसी स्टेडियम में मनाना चाहिए। प्रो. सेठ ने कहा कि सर सीवी रामन का विज्ञान के प्रति प्रेम, समर्पण और जुनून था। उन्होंने कहा कि कोई भी काम करने के लिए लगन और सच्ची निष्ठा का होना आवश्यक है। उन्होंने डॉ. मंजू शर्मा, डॉ. रितु, प्रो. अर्चना शर्मा जैसी वैज्ञानिकों का नाम लिया जिन्होंने राज्य स्तर पर अपने कार्यों से विज्ञान और शोध के क्षेत्र में अपना नाम बनाया है। प्रो. सेठ ने इन महिलाओं को आदर्श के रूप में लेकर आगे बढ़ने और अपना नाम बनाने की सलाह छात्राओं को दी। कार्यक्रम में **क्षेत्रीय आयोजन सचिव, विज्ञान भारती प्रोफेसर सोमदेव भारद्वाज, सीएसआरआई-एनवीआरआई की डॉ. नंदिता सिंह और एसजीपीजीआई की प्रोफेसर स्वस्ती तिवारी** ने भी अपने विचार रखे।



## बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय बीबीएयू में मनाया गया राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

लखनऊ (स्वरूप ब्यूरो)। हमारे चारों तरफ विज्ञान है। इस धरती के निर्माण से लेकर मानव जीवन की उत्पत्ति। सब कुछ रासायनिक गतिविधियों के कारण ही हुआ है। विज्ञान की खोज करते-करते हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि पर्यावरण को क्षति न पहुंचे। नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब परिणाम भयानक होंगे। ये बात बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय बीबीएयू के प्रोफेसर नवीन कुमार अरोड़ा ने कही। बीबीएयू में शुक्रवार को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। इस वर्ष यह विज्ञान दिवस महिलाओं को समर्पित वीमेन इन साइंस विषय पर आधारित है। प्रोफेसर अरोड़ा ने कहा कि हमारे दिनचर्या के कार्यों में हमारे खान,पान, पहनावे हर चीज के पीछे विज्ञान है। बस जरूरत है तो ध्यान देने की। हमें हमारे पर्यावरण और आस.पास छिपे विज्ञान को देखने। समझने और उसके तथ्यों को उजागर करने की आवश्यकता है। प्रोफेसर शिल्पी वर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय विज्ञान दिवस आज ही के दिन हुई रमन प्रभाव की खोज के कारण मनाया जाता है। इस वर्ष की थीम वीमेन इन साइंस रखी गयी है ताकि विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं को और अधिक योगदान देने के लिए प्रेरित किया जा सके। कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि प्रोफेसर पीके सेठ ने कहा कि कोई भी काम करने के लिए लगन और सच्ची निष्ठा का होना आवश्यक है। सर सीवी रमन का विज्ञान के प्रति प्रेम। समर्पण और जुनून था। उन्होंने डा.मंजू शर्मा,डा.रितु, प्रो.अर्चना शर्मा जैसी वैज्ञानिकों का नाम लिया जिन्होंने राज्य स्तर पर अपने कार्यों से विज्ञान और शोध के क्षेत्र में अपना नाम बनाया है। **राष्ट्रीय स्वरूप 29/2/20**

inext 29/2/20

## वीमेन इन साइंस पर सबने रखी अपनी बात

बीबीएयू और इंटीकाल विधि में  
मन राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

LUCKNOW(28 Feb);बीबीएयू पर एवं इंटीकाल यूनिवर्सिटी में शुक्रवार

को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया. इसका विषय महिलाओं का विज्ञान और तकनीकों में भागीदारी साइन किया एमओयू

राहा.बीबीएयू में मुख्य अतिथि के तौर पर एवं डॉ.पीके.सी.ए.एस.आई.आर. और एवं सीईओ

बायोटेक पार्क, पीके सेठ मॉड्यूर रहे. सीडीआर आई-सीएसआईआर (कार्गिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च - सेंट्रल ड्यू

इंटीग्रेल यूनिवर्सिटी में विज्ञान रिसर्च इंस्टीट्यूट) और इंटीग्रेल यूनिवर्सिटी के बीच एमओयू पर साइन किए गए.

कार्यक्रम

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय में मनाया गया राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, वीमेन इन साइंस हे इस बार की थीम

## पर्यावरण और आसपास के विज्ञान को समझने की जरूरत

अनुराग तिवार लखनऊ

PRO

हमारे चारों तरफ विज्ञान है। इस धरती के निर्माण से लेकर मानव जीवन की उत्पत्ति, सब कुछ रासायनिक गतिविधियों के कारण ही हुआ है। विज्ञान की खोज करते-करते हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि पर्यावरण को क्षति न पहुंचे। नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब परिणाम भयानक होंगे।

ये बातें बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विधि के प्रो. नवीन कुमार अरोड़ा ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर कही। इस वर्ष यह विज्ञान दिवस महिलाओं को समर्पित 'वीमेन इन साइंस' विषय पर आधारित है। प्रो. अरोड़ा ने कहा कि दिनचर्या के कार्यों में, हमारे खान-पान, पहनावे हर चीज के पीछे विज्ञान है। बस जरूरत है तो ध्यान देने की। हमें हमारे पर्यावरण और आस-पास छिपे विज्ञान को



बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करती हैं. शिल्पी वर्मा।

दिवसों में लखनऊ विज्ञान का महत्व

लखनऊ। अंबेडकर विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, वीमेन इन साइंस हे इस बार की थीम पर कार्यक्रम को संबोधित करती हैं. शिल्पी वर्मा। प्रो. अर्चना शर्मा जैसी वैज्ञानिकों का नाम लिया जिन्होंने राज्य स्तर पर अपने कार्यों से विज्ञान और शोध के क्षेत्र में अपना नाम बनाया है। प्रो. सेठ ने इन महिलाओं को आदर्श के रूप में लेकर आगे बढ़ने की सलाह दी।

29/2/20

अमर उजाला 29/2/20

## प्रेम, समर्पण, जुनून से मिलेगा विज्ञान के क्षेत्र में लक्ष्य

लखनऊ। सीवी रमन का विज्ञान के प्रति प्रेम, समर्पण और जुनून था, जिसने उन्हें इस क्षेत्र में सफलता दिलाई। डॉ. मंजू शर्मा, डॉ. रितु, प्रो. अर्चना शर्मा

आदि ने भी अपने कार्यों से विज्ञान और शोध के क्षेत्र में नाम कमाया। ये बातें सीएसआईआर के पूर्व निदेशक प्रो. पीके सेठ ने कहीं। वह बीबीएयू में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम



में बोल रहे थे। पीजीआई की प्रो. स्वस्ति तिवारी ने कहा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम हो रहा है। डॉ. नंदिता सिंह ने कहा कि हर महिला विज्ञान से किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई है। प्रो. सोमदेव भारद्वाज ने कहा कि हमें स्वकेंद्रित न होकर समाज के बारे में सोचना होगा। इस अवसर पर प्रो. नवीन कुमार अरोड़ा, प्रो. आरपी सिंह, प्रो. डीपी सिंह, प्रो. एच श्रीवास्तव आदि उपस्थित थे।

PRO



# International Conference on “Advances in Sustainable Agriculture: Bioresources, Biotechnology and Bioeconomy”

An International Conference on “Advances in Sustainable Agriculture Bioresources, Biotechnology and Bioeconomy” was organised on November 29 and 30, 2019 at Bhopal, Madhya Pradesh. The International Conference was jointly organized by the Mansarovar Global University, Bhopal and the PHSS Foundation for Science & Society, Lucknow.



The inaugural function was presided over by the Chief Guest, Dr Manju Sharma, NASI-DST Women Distinguished Scientist Chair and former Secretary, Department of Biotechnology, Government of India. Mr. Gaurav Tiwari, Pro-Chancellor of Mansarovar Global University welcomed the dignitaries and participants. In his welcome address he said that the Indian scientific community has great responsibility in ensuring the food and nutritional security of the country and at the same time contributing to the welfare of the farming community. Poverty and hunger need to be alleviated at war footing. Welcoming the delegates, Professor Arun Kumar Pandey, Vice-Chancellor, Mansarovar Global



University, emphasized that India has robust farming communities and traditions, but they need technological inputs for higher crop yield, control of pests and pathogens, post-harvest storage, transportation and marketing. Molecular and biotechnological tools should also be pressed into service for achieving crop yields comparable to developed countries. Wise use of water and reduced dependence on pesticides are also important for sustainable agriculture.



In the inaugural session, Prof. R.P. Singh, Secretary General of PHSS Foundation highlighted the objectives and functioning of the foundation and announced the Conferment of Lifetime Achievement Award on Dr. Manju Sharma. Five other scientists received awards for excellence in their fields of scientific activity. Prof. P.K. Seth, President, PHSS Foundation gave a brief background of the Young Scientist Conclave and emphasised the need for utilizing the biotechnological techniques for crop improvement.

Dr Manju Sharma delivered the inaugural address and acceptance speech for Lifetime Achievement Award. She said that for Indian Agriculture to be sustainable we need to take care of soil, water, biodiversity and quality of human life. She threw light on the recent

trends in agriculture and emphasised that there is a need for enriching the rural economy and enhance farmer's income. The problem of hunger and malnutrition should be solved through crop diversification, improved varieties and environment-friendly methods of cultivation. Farmers deserve help in profitable marketing of their produce. Dr Sharma also stated that greater involvement of women in science is essential, as women are more sensitive to environmental and human needs.

Invited lectures were delivered by Prof. Marcio J. Pocas-Fonseca (University of Brasilia, Brazil), Prof. N. Raghuram (GGS Indraprastha University, New Delhi), Dr R.D. Tripathi (CSIR-National Botanical Research Institute, Lucknow), Prof. Naveen Kumar Arora (Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow), Prof. Renu Deswal (University of Delhi), Prof. S.M. Paul Khurana (Amity University, Haryana), Dr M.K. Tripathi (ICAR-CIAE, Bhopal), Dr Girish Mishra (University of Delhi), Prof. V.N. Pandey (DDU Gorakhpur University, Gorakhpur), Prof. C. Rajasekaran (Vellore Institute of Technology, Vellore).

PHSS Foundation Award lectures were delivered by Prof. R.C. Chaudhary (PRDF, Gorakhpur) and Dr Purabi Saikia (Central University of Jharkhand, Ranchi). Dr Ulrich Berk from Germany presented scientific evidence on how homo organic farming (Agnihotra') helped in improving air quality and in enhancing crop yields through improved soil quality and optimal water use. The major thematic areas covered during the conference were: 1. Bioresources and Biodiversity, 2. Plant Tissue Culture and Transgenic Technology, 3. Plants and Biotic stresses/ Plant-Microbe Interactions, 4. Plant Genetics and Breeding, 5. Agro-product processing and entrepreneurship and 6. Impact of Climate Change on Agriculture.



A Young Scientist Conclave was organized on the second day of the conference. Dr P.K. Singh (CSIR-National Botanical Research Institute, Lucknow) delivered lead lecture and highlighted the work being done on developing cotton varieties resistant to white fly that cause viral diseases. His lecture was followed by presentations of the young scientists on molecular and biotechnological aspects of crop improvement which have the potential to revolutionize agriculture in India. Besides oral presentations, poster session was also organized. Many of the presentations generated lively discussions.

At the valedictory function on second day of the conference, Mr. Gaurav Tiwari said that agriculture is the backbone of Indian economy and over 50% of our people depend on it for their livelihood. He called upon the scientists to combine traditional practices and modern technology for developing crops that would help achieve higher productivity. In his valedictory remarks, Prof. P.K. Seth suggested that India, being one of the richest countries of the world in biodiversity, is uniquely positioned to harness the potential of bio-based economy. There is an urgent need to take appropriate measures to make India a bioresource-based economy that would help achieve economic and environmental sustainability in both rural and urban areas. Prof. Arun Pandey emphasized that application

of biotechnology would be crucial for crop improvement in India. Food that we produce should be more nutritious and farmers should earn more for their produce. There should be active participation of growers, distributors, retailers, consumers and waste managers who play a major role in ensuring a sustainable agricultural system.

A total of 130 delegates from across the country and abroad participated. The conference provided an opportunity to the participants to exchange their views and share their ideas for promoting sustainable use of bioresources, use of biotechnology in crop improvement and bioeconomy. This Conference was sponsored by the National Academy of Sciences, India and NASI (Bhopal Chapter). The certificate to the winners of young scientist award were distributed by the dignitaries on the dai



## **International Conference : 13-16, December, 2018 at Assam Agricultural University, Jorhat (ICCBSA-2018)**

An International Conference jointly organized by Assam Agriculture University, Jorhat and PHSS Foundation, Lucknow on Climate Change, Biodiversity and Sustainable Agriculture (ICCBSA-2018)

Prof. H.S. Srivastava Foundation for Science and Society and Assam Agriculture University, Jorhat jointly organized an International Conference on "Climate Change, Biodiversity and Sustainable Agriculture (ICCBSA-2018)" during 13-16 December, 2018 at AAU, Jorhat (Assam). The Conference was attended by more than 1000 participants from various countries including India, Bangladesh, Nepal, Philippines, African Countries, Europe and USA etc. Total 24 technical session including Young Scientist Conclave were organized successfully. The Conference recommended for conservation of terrestrial and aquatic ecosystems as well as a fast incorporation of adaptation, mitigation and resilience measures to cope with climate change related to crisis towards sustainable development.



## ICPEP-6

During ICPEP-6 on 29 November 2018, one special session devoted to Prof. H.S. Srivastava Foundation for Science and Society (PHSSFSS) was also organized and Prof. Albert Reif from University of Freiburg, Germany delivered the Prof. H.S. Srivastava Memorial Lecture. He was felicitated with the PHSSFSS Medal for his contribution in the area of forest ecosystem management.



**Prof. R.P. Singh facilitating Prof. H.S. Srivastava Memorial Lecture Award to Prof. Albert Reif**



**(L-R) Prof. R.S. Tripathi, Prof. Albert Reif, Prof. S.K. Barik, Prof. R.D. Tripathi and Prof. R.P. Singh**

## World Environment Day celebrated at BB Ambedkar University, Lucknow on 5<sup>th</sup> June, 2018





## National Conference held at JNU, New Delhi (23-24 March, 2018)



## ICPEP-5

During ICPEP-5 on 25 February 2015, one special session devoted to Prof. H. S. Srivastava Foundation for Science and Society was also organized and Prof. Hendrik Kupper, Biology Center of the Czeck Academy of Sciences, delivered the Prof. H. S. Srivastava Memorial lecture.



Dr. P.V. Sane presenting Prof. H.S. Srivastava Memorial Lecture Award to Prof. Hendrik Kupper



L-R: Prof. Hendrik Kupper, Prof. P.V. Sane, Prof. R.P. Singh and Dr. S.N. Jena

## Office Inauguration at Eldeco Xpress Plaza on 2<sup>nd</sup> April, 2016



**PHSS memorial lecture during National Conference on ‘Strategies in Plant Physiological Research for meeting Challenges in Agriculture’(NCPBHU2016) was held on March 3-5, 2016 at BHU, Varanasi.**

The lecture on aforesaid topic was delivered by an eminent plant molecular biologist Prof. S.K.Sopory, Former V.C, Jawahar Lal Nehru University, New Delhi. Prof. A.Narayanan was the Chairman of the Memorial Lecture Session.



# **National Conference at BB Ambedkar University, Lucknow: 23-24 , November 2015**

## **Report**

### **Climate Change Conference, CCSD-2015**

**The Green and Renewable Energy Technologies, Resilient Ecosystems and Ecological Agriculture can help to achieve climate adaptation and mitigation goals.**

**RanaPratap Singh  
Convenor, CCSD-2015**

The National Conference Climate Change and Sustainable Development; emerging Issues and Mitigation Strategies (CCSD-2015), held at BBA University, Lucknow on 23<sup>rd</sup> – 24<sup>th</sup> November, 2015. There are strong evidence over the past few decades that enhanced atmospheric CO<sub>2</sub> up to more than 400 ppmol, the global warming is severely impacting food production, marine fisheries, corals, glaciers, aquatic, hilly and terrestrial ecosystems. The enormous human population shift, human activities, industrialization and burning of fossil fuel and indiscriminate use of natural resources has created the climate crisis with various general and specific problems at global as well as local levels.

About 250 academicians, scientist, professions, young researchers and students from different part of the country and abroad deliberated two days from morning to evening during the different technical sessions and three thematic symposia on climate change and plants, green technology entrepreneurship, green building; environmental clearance, appraisal mechanisms. Environmental compliance, software development and CESR Guidelines, and policy and practices of sustainable agriculture and climate change management.

A separate award session for Prof. H.S. Srivastava Foundation Awardees was held and a young scientist's conclave was organized to give young researchers of up to 40 years to present their ideas and works on the understanding of current climate crisis and strategies for its management at global, national, regional and local levels.

The conference was inaugurated by Magsaysay and Stockholm Water Prize Awardee Jalpurus Dr. Rajendra Singh along with other dignitaries like Professor K. Raja Reddy, a climate modeling expert from Mississippi State University, USA, Dr. P.K. Seth, Former Director, IITR and Former CEO, Biotech Park, Dr. D.C. Uprety, Former Emeritus Scientist, IARI, New Delhi, Prof. N. Raghuram, Dean, School of Biotechnology, Guru Govind Singh Indraprastha University, New Delhi and Dr. Ram Lakhan Singh, Former Principal Conservator of Forest UP and distinguished wild life expert.

Dr. Rajendra Singh advocated to strengthen the climate change adaptation and mitigation strategies by involving the local communities at large scale exemplifying the work on water conservation in deserts of Rajasthan by Tarun Bharat Singh under his leadership. The Guest of honour Professor K. Raja Reddy spoke on significance and insight his work on climate modeling to plan the policies and practices of adaptation and mitigation. Dr. Ram Lakhan Singh shared his expertise and vision on role of biodiversity and emerging technologies in climate change management. The inaugural session was jointly chaired by Dr. P.K. Seth, President PHSS Foundation and Dr. D.C. Uprety, President, The Society for Science of Climate Change and Sustainable Environment. Life Time Achievement Award of Prof. H.S. Srivastava Foundation, Prof. A. S. Raghvendra of Hyderabad University presented his work on photorespiration in plants as an essential adaptation to oxidative stress.

PHSS Foundation, Social Contribution Awardee Dr. Rakesh Pandey of CIMAP, Lucknow presented the importance of *Trichoderma* in Sustainable Agriculture. The young scientist awardee, Dr. Amit Mishra of IIT Jodhpur, Dr. Priti Tripathi of Lucknow University and Dr. Rahul Kumar Singh of BHU also presented their work.

The afternoon session on climate change and emerging issues was chaired by Prof. S.R. Singh, Former Vice Chancellor, R A University, Samastipur, and Prof. K. Raja Reddy (Mississippi, USA), Prof. M.H. Fulekar (CUG, Gandhinagar), Prof. Uday Mohan (K.G. Medical University, Lucknow), and Dr. Arpita Mohan presented on the significant challenges on climate change in Agriculture, Ecosystem Management and Health Sectors.

The last session of 1<sup>st</sup> day was chaired by Professor R.S. Tripathi, Emeritus Scientist, CSIR-NBRI, Lucknow and Co-chaired by Dr. Ram Laxhan Singh, Former PCCF, UP, Dr. D.C. Uprety and Prof. Nandula Raghuram of Delhi, Prof. M.N.V. Prasad of HU, Hyderabad, Dr. V.K. Singh, ICAR-CISH and Dr. K. Gopal, Secretary General, AEB, Lucknow were distinguished speakers of this key note forum. A general body meeting of PHSS Foundation and to the Society for Science of Climate Change was organized subsequently on 23<sup>rd</sup> evening for organizational deliberations.

The second day of the conference observed many thematic symposia organized in different seminar halls and very exciting sessions like young scientist's conclave. The various sessions and symposia were chaired and co-chaired by senior climate expert e.g. Dr. S.K. Bhargava, Former Deputy Director, IITR, Lucknow, Prof. Dinesh Abrol, Emeritus Scientist, Policy Centre, JNU, New Delhi, Prof. P.W. Ramteke (SHITAS, Allahabad), Prof. B.P. Mishra of Mizoram University, Aizwal, Prof. M.N.V. Prasad of Hyderabad University, Dr. S.C. Sharma, General Secretary, CGES, Sh. Mukesh Shukla, Director, SAMADHAN, Dr. N.K. Bajpai, Solar Energy Expert, and Dr. Sanjay Mishra, Advisor DST, New Delhi on deputation.

In thematic symposium climate change and plants, Prof. B.P. Mishra (Aizwal), Prof. P.W. Ramteke (Allahabad), Dr. Dinesh Yadav (Gorakhpur), Dr. S.C. Sharma and Dr. J.S. Singh (Lucknow) presented their invited talks. The young scientist conclave, chaired by Prof. K. Raja Reddy (Mississippi) was a very exciting session in which 10 young scientists from various places of India presented their work on different aspects of climate change studies and honoured with medal for their presentations in order of ranking by the panel of judges.

The thematic symposium of Green Technology Entrepreneurship was chaired by Dr. N.C. Bajpai and lead lectures were delivered by Dr. Usha Bajpai of LU, Lucknow, Mr. Narendra Kumar and Mr. Ashu Dubey of SAMADHAN, Lucknow followed by presentations and discussions by others in a very vibrant session. The symposium Green Building was chaired by Dr. S.K. Bhargava, Former SEAC, UP Chairman, and Former DD, IITR, Lucknow.

A daylong symposium was organized on 24<sup>th</sup> November, 2015 on Policy and Practices of Sustainable Agriculture and Climate Change Management, which was chaired by Prof. Dinesh Abrol, Emeritus Scientist, Policy Centre, JNU, New Delhi. Dr. Yogesh Bandhu, (DBT-PRC-BBAU), Dr. A.K. Singh, GEAG, Gorakhpur, Prof. S. Nayak (BBA University, Lucknow), Dr. Amarnath Tripathi (IEG, New Delhi), Dr. Amitabh Mishra, GDS, Lucknow and Sh. Ram Kumar, DAG, Lucknow presented their talk. A large number of young scientists, Ph.D. and M.Sc. students deliberated and participated in the discussions in various sessions and presented their papers orally on in poster sessions.

The conference was organized by Department of Environmental Science, BBA University, Lucknow in collaboration with Professor H.S. Srivastava Foundation for Science and Society, The Society for Science of Climate Change and Sustainable Environment and DST-Policy Research Centre, BBA University, Lucknow. The financial support for the conference was received from BBA University, Lucknow, Department of Science and Technology (DST), New Delhi, Prof. H.S.

Srivastava Foundation, Lucknow, SEARCH Foundation, Delhi, Paramarsh, Lucknow, Environment and Technology Research Centre, Lucknow and SAMADHAN, Lucknow.

We are grateful to all collaborating and funding partners. We gratefully acknowledge support of Prof. R.C. Sobti, Vice Chancellor, BBA University and other administrative officers and staff of the University, Prof. D.P. Singh, Dean SES and Head, DES, Dr. Naveen Arora, Co-ordinator DEM, Mr. N.K.S. More, Dr. Narendra Kumar, Dr. VenkateshDutta, Dr. J.S. Singh and other faculty, staff and students of SES. Mr. A.K. Jain deserves special thanks.



**National Conference at Doon University, Dehradun :  
21-23 March, 2014**





## Misc. other's Programmes

